समय-समय की हवा

समय की बात–समय के हाथ–कि किसी समय की गोद में एक सुखी-संतोषी गाँव बसा हुआ था। अपने-अपने घर और अपने-अपने दरवाज़े होते हुए भी गाँव की चौपाल एक थी। सभी घरों के बुज़ुर्ग और नौजवान ब्यालू से निबटते ही अलाव के चारों तरफ़ बैठकर घरेलू बातें करते थे। पुरानी बातों के झपाटे उड़ते थे। हँसने की बात सुनकर हँसते थे, दुख की बात सुनकर आहें भरते थे। किसी का भी मुँह झूठ और छल-कपट की वाणी सीखा हुआ नहीं था। सच्ची बात कहते थे और सच्ची बात सुनते थे। घर-घर चूल्हे में मंद-मंद आँच तो जलती थी, मगर किसी भी कोने में आग लगी हुई नहीं थी। बूते की कामना और बूते का काम–नीचे धरती और ऊपर राम।

मुट्ठी में समाय इतनी ही ज़रूरतें थीं। पेट के लिए रोटी–पीने के लिए पानी। पहनने को कपड़े–रहने को मकान। सूर्योदय से पहले ही घर-घर में रोशनी फ़ैल जाती।

उस गाँव के ज़मींदार ने अपनी ज़मीन किसान को खेती के लिए सौंप रखी थी। किसान ने लगान न देने की खातिर बहुत मिन्नतें कीं, लेकिन ज़मींदार किसी भी कीमत पर राज़ी नहीं हुआ। किसान ने ज़्यादा मगज़मारी की तो ज़मींदार बोला कि उसके पास काफ़ी ज़मीन है। मरने पर साथ तो ले जाने से रहा! जोतो-बोओ-कमाओ और खाओ। किसान ने एक दिन खटपट निबटाने के लिए चौपाल में बात चलाई तो बस्ती के सब लोगों ने ज़मींदार की बात ही रखी।

संयोग का खेल कि एक दिन ज़मींदारवाली ज़मीन से झाड़ियों की जड़ें निकालते समय किसान को मोहरों से भरा एक कलश नज़र आया। चारों ओर से उकेरने पर एक-एक करके सात कलश हाथ लगे। काम छोड़कर किसान ने तुरंत बैल जोते। गाड़ी पर सातों कलश रखे और तपती दोपहर में ज़मींदार के घर की तरफ़ चल पड़ा।

ज़मींदार ने दूर से ही गाड़ी को आते देखा तो मन-ही-मन किसान पर नाराज़ हुआ। साफ़ इनकार करने के बावजूद लगान की गाड़ी जोतकर लाया तो लाने दो। अच्छी तरह खबर लूँगा। बस्ती की बात को टालने की हिम्मत हुई तो हुई कैसे! लेकिन गाड़ी पर कलश देखकर उसका गुस्सा कुछ ठंडा पड़ गया। मुसकराकर पूछा, "यह फिर क्या नयी मुसीबत ले आया?"

किसान ने भी उसी तरह मुसकराते हुए जवाब दिया, "लगान न लेने की हेकड़ी तो निभ गई, लेकिन अब यह मुसीबत तो कबूल करनी ही पड़ेगी।"

ढक्कन उघाड़ने पर ज़मींदार ने चमचमाती मोहरें देखीं तो आश्चर्य से पूछा, "बाजरे की जगह खेत में मोहरें पैदा हुई हैं क्या?"

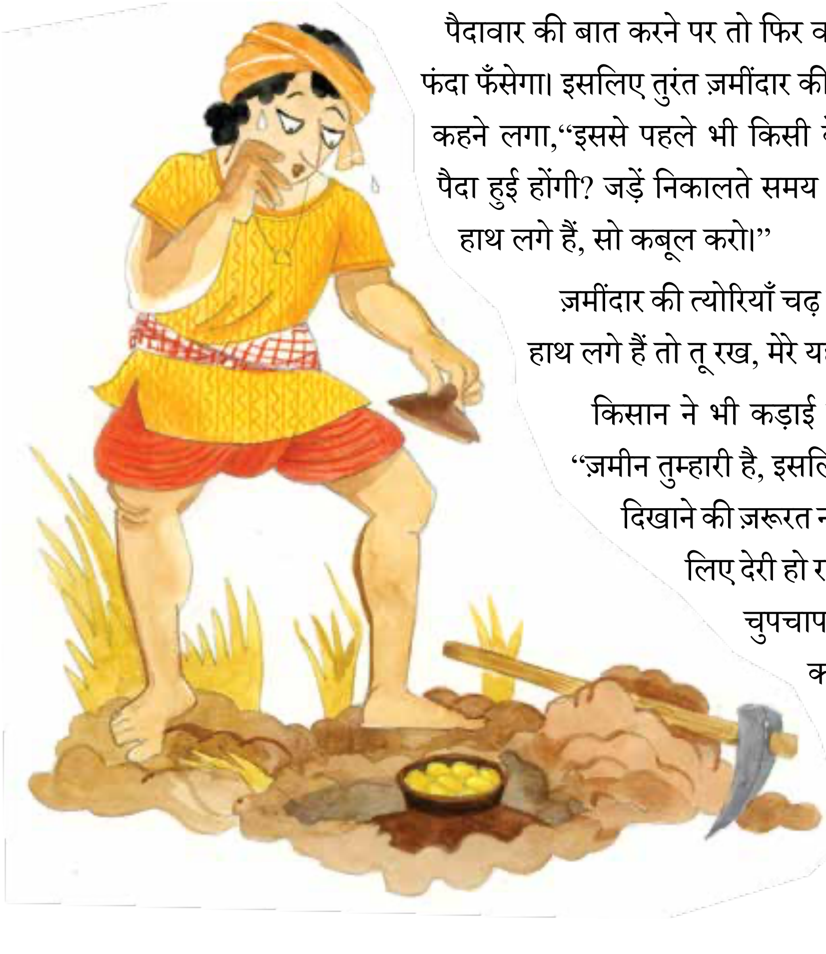

पैदावार की बात करने पर तो फिर वही लगान वाला फंदा फँसेगा। इसलिए तुरंत ज़मींदार की बात काटते हुए कहने लगा,"इससे पहले भी किसी के खेत में मोहरें पैदा हुई होंगी? जड़ें निकालते समय यह सात कलश हाथ लगे हैं, सो कबूल करो।"

ज़मींदार की त्योरियाँ चढ़ गईं। बोला, "तेरे हाथ लगे हैं तो तू रख, मेरे यहाँ क्यूँ लाया?"

किसान ने भी कड़ाई से जवाब दिया, "ज़मीन तुम्हारी है, इसलिए लाया। आँखें दिखाने की ज़रूरत नहीं। मुझे काम के लिए देरी हो रही है। शराफ़त से चुपचाप कलश कबूल करके मेरा फंदा काटो। लगान वाली बात निभ गई सो ही बहुत है।"

ज़मींदार आत्मीयता के स्वर में मीठा उलाहना देते कहने लगा, "देख, तू फिर अन्याय की बात कर रहा है। जड़ें निकालते समय कलश तेरे हाथ लगे हैं तो मैं कैसे कबूल कर सकता हूँ! मेरी अक्ल तो अभी तक ठिकाने है।"

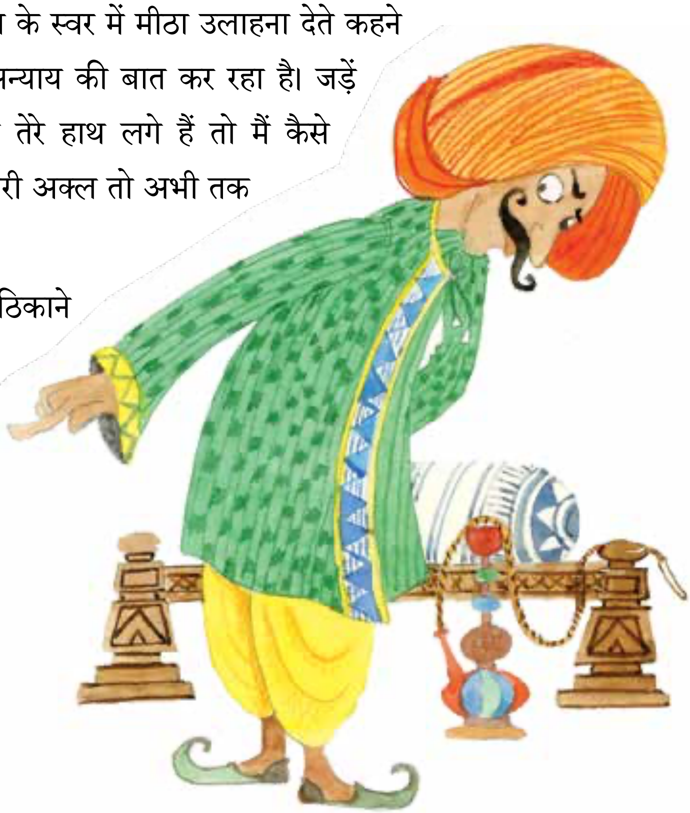

"अगर अक्ल ठिकाने होती तो यूँ तुरंत ना नहीं करते। ऐसी अबूझ बात तो कोई बच्चा भी नहीं करता। जब खेत तुम्हारे हैं तो कलश भी तुम्हारे हैं। इसमें ऐसी कलह की बात ही क्या है।"

ज़मींदार व्यंग्य करते हुए बोला, "सारे इलाके की अक्ल का तू अकेला ही इज़ारेदार दिखता है। ऐसी बेवकूफ़ी की बात सुनकर बस्ती के लोग हँसेंगे, फिर भी पंचायत बैठाने के लिए मेरी ना नहीं है।"

किसान ने कुछ तड़पते हुए ज़ोर से कहा, "तुम्हारी ना क्यों होगी, मेरी ना है। गरीब के साथ कोई भी न्याय नहीं करता। पंचायती के लायक बात हो तो पंचायती भी कराएँ।"

ज़मींदार तैश में आकर कहने लगा, "तेरे कहने से क्या होता है। कैसे पंचायती की बात नहीं है, उस दिन मेरे खेत में तूने करचा गड़ा था तब मेरा पाँव तो बेकार नहीं हुआ। बता, चौमासे में मेरे खेत पर काम करते समय तुझ पर बिजली गिरे तो तू मरेगा या मैं?"